B.A. (Part I) EXAMINATION, 2019

HINDI LITERATURE-II

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न-पत्र : कहानी एवं उपन्यास

Time Allowed : Three Hours　　　　Maximum Marks : 100

1. निम्नलिखित गद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये।

(क) "उसने तिलमिलाकर मन ही मन प्रश्न किया–किसने ऐसे सुकुमार फूलों को कष्ट देने के लिए निर्दयता की सृष्टि की ? आह रह नियति! तब इसको लेकर मुझे घरबारी बनना पड़ेगा क्या ? दुर्भाग्य जिसे मैंने कभी सोचा भी न था। मेरी इतनी माया-ममता, जिस पर आज तक केवल बोतल का ही अधिकार था– इसका पक्ष क्यों नहीं लेने लगी ? इस छोटे-से पाजी ने मेरे जीवन के लिए कौन-सा इन्द्रजाल का बीड़ा उठाया है। तब क्या करूँ ? कोई काम करूँ ?"

अथवा

"मनुष्य की भावनाएँ बड़ी विचित्र होती है। निर्जन, एकांत स्थान में निस्संग होने पर भी कभी-कभी आदमी एकांकी अनुभव नहीं करता। लगता है, इस एकांकीपन में भी सब कुछ कितना निकट है, कितना अपना है। परन्तु इसके विपरीत कभी-कभी सैंकड़ों नर-नारियों के बीच जन-रवमय वातावरण में रहकर भी सूनेपन की अनुभूति होती है।"

(ख) "अपनी कोठारी में और कोई कष्ट नहीं था; पर भयंकर गर्मी के दिन और पंखा नहीं। रात तो जैसे-जैसे छत पर कट जाती; पर दोपहर में तो छत पर बने ये कमरे भट्टी की तरह जलते थे। छुट्टियों के दिन बिताये नहीं बीत रहे थे। अपनी किसी सहेली के यहाँ जाने की इच्छा नहीं होती थी। पड़ोस तक में जाना छोड़ रखा था। दु:ख में कोई साथ नहीं होता। बस, एक गाँठ बाँध रखी थी कि जब तक ये बुरे ग्रह टल नहीं जाते, तब तक सभी कुछ चुपचाप सहन करना है।"

अथवा

"ठंडे पानी की पहली ही अंजुलि से उसके सारे शरीर में कँपकँपी-सी दौड़ गई। उसने तौलिए के मोटे रोयों में मुँह छिपा लिया। उसे लगा कि अभी नील से उसका

परिचय बिल्कुल नया है। और अनजाने अनचीह्नी भावनाएँ, अनजान स्पर्श, दलहीज के उस पार उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उसकाशरीर जैसे कसे हुए तारों के वाद्य की तरह था, उँगलियो की हल्की टकोर के लिए आकुल, अधीर।''

(ग) ''तप्त धरती की तरह मिस शास्त्री, जिनकी निराशाओं ने उनका जीवन के प्रति पूरा दृष्टिकोण विकृति कर दिया। जिस वस्तु के लिए वह तृषित रहीं, शायद उसे हेय तथा निकृष्ट समझ उन्होंने इधर से अब मुँह मोड़ लिया था। वह समस्त संचित स्नेह उन्होंने अपनी बिल्ली पर उँडेल दिया था, जिससे यह झलक जाता था कि मिस शास्त्री में भी कुछ संवेदनाएँ शेष हैं।''

अथवा

''घड़ी की टिकटिक सारे कमरे में गूंज रही थी। सुषमा बार-बार आँखें खोल घड़ी की सुइयों को देख लेती। उसका शरीर ऐसा निढाल था जैसे उसकी सारी शक्ति रिस गई हो। हर बार समय देखती और उसकी विवश पलकें छलछलाई आँखों पर मुँद आतीं। वह इतनी उद्विग्न क्यों थी, वह स्वयं नहीं जान पा रही थी। उसे रह-रहकर लगता कि जैसे किसी भीषण घटना का सूत्रपात हो गया है। एक अज्ञात भय उसके हृदय में समाता जा रहा था।''

(घ) ''हमारे मन में उस समय क्या भावनाएँ उठ रही थीं यह अगर बता पाता तो यह खरोंच यह पीर ही क्यों रह गई होती। सिर्फ एक धुँधला-सा संवेदन इसका अवश्य था कि जैसे बर्फ की सिल के सामने खड़े होने पर मुँह पर ठण्डी ठण्डी भाप लगती है, वैसे ही हिमालय की शीतलता माथे को छू रही है। और सारे संघर्ष, सारे अन्तर्द्वन्द्व, सारे ताप जैसे नष्ट हो रहे हैं। क्यों पुराने साधकों ने दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों को ताप कहा था और उसे शमित करने के लिए वे क्यों हिमालय जाते थे यह पहली बार मेरी समझ में आ रहा था।''

अथवा

''मैं नहीं जानता था कि यह परिणति ही उस प्रेम का अंत है। फिर अंत प्रेम का ही नहीं हुआ, और भी बहुत सी नाजुक, खूबसूरत और इन्द्रधनुषी लगने वाले भ्रमपूर्ण डोरों का भी हुआ, उन सब डोरों का जिन्होंने मेरे सारे व्यक्तित्व को रेशमी गिलाफ-सा पहना रखा था। यह पहला और जबरदस्त मोह-भंग था। यह स्वीकार करना आसान नहीं था कि जो किताबों......में है, जिन्दगी उससे बिल्कुल मुखालिफ है उसका किताबों में दूर-दूर तक कहीं पता नहीं।''

2. औपन्यासिक तत्वों के आधार पर 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास की सफलता सिद्ध कीजिये।

अथवा

'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास के शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए।

3. 'उसने कहा था' कहानी के नायक 'लहना सिंह' का चरित्र-चित्रण कीजिये।

अथवा

"'पाजेब' बाल मनोविज्ञान पर आधारित हिन्दी कहानियों में से सर्वश्रेष्ठ कहानी है।" इस कथन के आलोक में 'पाजेब' कहानी की समीक्षा कीजिये।

4. "पशु मनुष्य के निश्छल प्रेम से परिचित रहते हैं।" 'सोना' रेखाचित्र के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिये।

अथवा

'बसंत के अग्रदूत' शीर्षक संस्मरण में वर्णित 'निराला जी' की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित कीजिये।

5. एक सफल हिन्दी कहानी में किन-किन तत्त्वों का समावेश होता है ? विस्तार से वर्णन कीजिये।

अथवा

'आँचलिक उपन्यास' की विशेषताओं का वर्णन कीजिये।